THE PASSION OF JESUS CHRIST

Whether or not you have ever attended a church service, you must have come across this title that was highly popularized by a well-known Hollywood movie. A man in severe pain, deep wounds, crying, rejected, humiliated, dripping blood from His body and nailed to a cross – such a picture would come to your mind at the mention of the crucifixion of Jesus Christ. It is in His honour that every year Christians across the world celebrate the “Passion Week”. The Passion Week begins with “Palm Sunday" that commemorates the reception of Jesus Christ as the promised Messiah and King. This same Messiah is then rejected by His own people and handed over to the authorities to be crucified on "Good Friday". The week closes with this dead Messiah validating His deity and power over sin, death and the Devil by rising from the dead on the third day, called “Resurrection Sunday” or “Easter”.

The word “passion” refers to the intense love that Jesus Christ demonstrated as He went through an agonizing death for His people. But why does He have to suffer so much pain in His love? We all like to think of God as a loving and compassionate God. Yes, the God of heaven and earth is loving, gracious and merciful. But the Bible also describes God to be holy, righteous and the supreme Judge of all mankind. And His holiness demands that He will not tolerate any sin in His presence. So all of us, as we are guilty of sinning against God, will face His wrath and be eternally separated from Him for acting against His divine nature. On the Day of Judgment, it would be vain to expect God to exercise His love and mercy towards us at the expense of His holiness and justice, unless His anger against our sin has already been satisfied. That’s where the Passion Week comes into the picture.

It was during the Passion Week that God demonstrated not only His anger against sin but also His love towards sinners. What we could never achieve through our charitable works or religion, God the Father accomplished by sending His only Son Jesus Christ to take the form of man and suffer a cruel death in order to pay the penalty for our sins. It is Jesus Christ alone who has opened the gates of heaven for us, if we put our faith in Him. The Bible promises that whosoever believes in Jesus Christ will not be condemned. If we respond with total submission to Christ, we can be absolutely sure that our sins are forgiven. This is because God the Father demonstrated His acceptance of Christ's sacrifice by raising Him from the dead on Easter Sunday. If we confess Jesus as the only Master of our life and believe that He lived, died and was raised from the dead for us, we will be saved from the wrath of the holy God that is about to come when the world ends. Although, historically the Jewish leaders cunningly planned His death, Jesus had already said in the past that no one could take His life, but that He Himself would lay it down and then raise it up again. This was done according to the pre-determined purpose of God, with minute details of the events related to His death already been prophesied over a thousand years before they occurred. Such is the amazing love of God that He thought of us before we even came into the picture – by providing a means through which we can have peace with and access to the only true and living God.

This is the "gospel" or the “good news” of the Bible: God is offering forgiveness to us through His Son Jesus Christ. That is the message and significance of Good Friday & Easter. And such is the amazing God that Christians all around the world worship and proclaim.

यीशु मसीह का जुनून (पैशन)

चाहे आप कभी किसी चर्च सेवा में शामिल हुए हो या नहीं, आपने “पैशन ऑफ क्राइस्ट” नामक शीर्षक तो पहले ज़रूर सुना होगा। जैसे ही यीशु मसीह के क्रूस की बात होती है, वैसे ही एक ऐसे व्यक्ति का चित्र मन में आता है जो दर्द से पीड़ित था, गहरे घावों के साथ रोता हुआ, धुत्कारा गया, अपमानित किया गया और जिसका शरीर लहू लुहान था | उसी यीशु की याद में दुनिया भर के ईसाई लोग “पैशन वीक” मनाते है। पैशन वीक की शुरुवात “पाम सन” से होती है जब यीशु को वादा किया हुआ मसीहा और राजा के रूप में स्वीकारा गया था| इसी मसीहा को उनके ही लोगों ने शुभ शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाकर मार दिया| सप्ताह के अंत में "पुनरुत्थान रविवार" या "ईस्टर" पर यह मरा हुआ मसीहा अपने दैविकता का प्रदर्शन करते हुए तथा पाप, मृत्यु और शैतान के ऊपर विजय पाकर फिर जी उठे|

"जुनून" या “पैशन” ये जो शब्द है वो यीशु मसीह के उस गहरे प्रेम को दर्शाता है जिसकी झलक उनके पीड़ादायक मृत्यु में दिखती है, ऐसी मृत्यु जो उन्होने अपने लोगों के लिए सह ली| पर अपना प्रेम दिखाने के लिए उन्हे इतना दर्द क्यों सहना पड़ा? हम सब परमेश्वर को प्रेमी और कृपालु के रूप में सोचना पसंद करते हैं। हां, स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर प्रेमी, अनुग्रहकारी और दयालु अवश्य है। परन्तु बाइबल परमेश्वर को पवित्र, धर्मी और सभी मानव जाति के सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में भी बताती है। और उनकी पवित्रता यह मांग करती है कि वह अपनी उपस्थिति में किसी भी पाप को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसका मतलब है कि हम सब जो पाप करके दोषी ठहरे है, वो परमेश्वर के क्रोध का सामना करेंगे और उनके दिव्य स्वभाव के खिलाफ जाने के कारण उनसे अनंतकाल के लिए (सदा के लिए) अलग किए जाएंगे। भविष्य में हमारे न्याय के दिन परमेश्वर से दया की अपेक्षा करना व्यर्थ होगा क्यूंकी अपनी दया दिखाते वक़्त वे अपनी पवित्रता और इंसाफ को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते| केवल एक ही उपाय निकल सकता है अगर उनका हमारे प्रति जो क्रोध है वो पहले से ही किसी ने शांत किया हो तो| यही उपाय हम पैशन वीक में देखते है|

पैशन वीक ही वो समय है जब परमेश्वर ने पाप के खिलाफ ना केवल अपना क्रोध दिखाया बल्कि पापियों के प्रति अपना प्यार भी दर्शाया। हमारे दं का भुगतान जो हम हमारे पैसों या धर्म के कामों से कभी भी चुका नहीं सकते, पिता परमेश्वर ने स्वयं अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह के मृत्यु के द्वारा उसे चुका दिया। केवल यीशु मसीह ही है, जिसने हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खोल दिया है, अगर हम उन पर हमारा विश्वास रखे तो। बाइबल ये वादा करती है कि जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करेगा, वह नाश नहीं होगा। यदि हम पूरी तरह से यीशु मसीह पर भरोसा करेंगे, तो हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि हमारे पाप क्षमा किए गए है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर पिता ने ईस्टर रविवार को मसीह को मृतकों में से जी उठाकर मसीह के बलिदान की स्वीकृति का प्रदर्शन किया। अगर हम यीशु को हमारे जीवन का एकमात्र स्वामी मानेंगे और यह भी मानेंगे कि वह हमारे लिए इस दुनिया मे आया, मारा गया और हमारे लिए मरे हुओं में से जी उठाया गया, तो हम पवित्र परमेश्वर के क्रोध से बच जाएँगे जो दुनिया के अंत के समय दिखाई देगा। इतिहास कहता है की यहूदी नेताओं ने मसीह के मृत्यु की चतुराई से योजना बनाई थी, लेकिन यीशु ने पहले ही कहा था कि कोई भी उनकी ज़िंदगी नहीं ले सकता, लेकिन वह स्वयं अपनी ज़िंदगी कुर्बान करेंगे और स्वयं ही फिर से उठेंगे। यह परमेश्वर के पूर्व-निर्धारित उद्देश्य के अनुसार हुआ था, हजारों वर्ष पहले उनकी मौत से संबंधित घटनाओं का बारीकी से विवरण नबियों ने किया था। ईश्वर का अद्भुत प्रेम यह है कि उसने हमारे बारे में हमारे अस्तित्व मे आने से भी पहले सोचा - उन्होने एक साधन प्रदान किया जिसके माध्यम से हम सच्चे परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर सकते है।

यही है वो "सुसमाचार" या "खुश खबरी" जो बाइबिल सिखाती है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा हमारे लिए क्षमा प्रदान किया है| और यही है शुभ शुक्रवार और पुनरुत्थान रविवार का महत्त्व| और यही है वो अद्भुत पराक्रमी परमेश्वर जिसकी आराधना और प्रचार संसार के सारे मसीही लोग करते है|